RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./डी.एल. 0011/2012-14

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 26
सृष्टि संवत् 1960853114
29 सितम्बर 2013
दयानन्दब्द 189
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 26, 26/29 सितम्बर 2013 तदनुसार 14 आश्विन सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा एकत्रित 11 लाख रुपये उत्तराखंड राहत कोष के लिये भेंट

पद्मश्री विजय चोपड़ा ने बड़े सभागार का नवीनीकरण के पश्चात किया शुभारम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा उत्तराखंड प्रधानमंत्री राहत कोष के लिए 11 लाख रुपए की राशि का बैंक ड्राफ्ट हिन्द समाचार पत्र समूह के मुख्य संपादक पद्मश्री विजय चोपड़ा जी को देते हुए सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा, महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, उप प्रधान श्री स्वतन्त्र कुमार, रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी, सभा मंत्री श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, उप प्रधान श्री सरदारी लाल, उप प्रधान चौधरी ऋषि पाल सिंह एडवोकेट, सभा मंत्री श्री रणजीत आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर के कार्यालय में आज बड़े सभागार के नवीनीकरण का शुभारम्भ सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में पद्मश्री विजय चोपड़ा जी मुख्य सम्पादक हिन्द समाचार पत्र समूह ने ज्योति प्रज्वलित कर किया। यह सभागार आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है। इस मौके पर पद्मश्री विजय चोपड़ा जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि उन्हें सभा के नवीनीकरण किये गये सभागार को देख कर बहुत खुशी हुई। आज मैं यह देख कर निश्चित हो गया हूं कि आर्य समाज श्री सुदर्शन शर्मा जी के हाथों सुरक्षित है। इससे पूर्व पद्मश्री विजय चोपड़ा जी का सभा कार्यालय में पहुंचने पर फूलमालाओं द्वारा सभा अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं से एकत्रित की गई 11 लाख रुपये की राशि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष के लिये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी और कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा ने चैक द्वारा पद्मश्री विजय चोपड़ा जी को भेंट की । उन्होंने अपने बचपन को याद करते हुये कहा कि मैं आर्य समाजी हूं और मेरे पूज्य पिता अमर शहीद लाला जगत नारायण और हमारे समस्त परिवार को आर्य समाज की घुट्टी हमारी दादी जी से मिली थी और कादियां के डी.ए.वी. स्कूल को बनाने में मेरे मामा जी का पूरा सहयोग था। उन्होंने इस अवसर पर आर्य नेताओं और सभा की अन्तरंग सभा का मार्ग दर्शन किया और उन्हें अपना पूरा सहयोग देने का वायदा किया। उन्होंने कहा कि मैं जब भी कोई राहत फंड का शुभारम्भ करता था तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्व प्रधान स्वर्गीय पंडित हरबंस लाल जी शर्मा सबसे पहले मुझे फोन करते और फिर अपनी ओर से एक लाख रुपये की राशि उस राहत कोष के लिये अपनी ओर से भेंट करते थे। इसी तरह श्री सुदर्शन शर्मा जी भी अपने पिता जी के पदचिन्हों पर चलते हुये राहत कोष के लिये अपनी ओर से राशि भेंट करते हैं।

इस अवसर पर सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने श्री विजय चोपड़ा जी का स्वागत करते हुये कहा कि हम इनके आभारी हैं जो आज यहां आकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मार्ग दर्शन किया। सभा प्रधान जी ने कहा कि श्री विजय चोपड़ा जी राहत कोष के लिये अपने समाचार पत्र में बहुत बड़ा स्थान देते हैं जो कुल मिला कर करोड़ों रुपये का बनता है। सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि पद्मश्री विजय चोपड़ा जी का सदैव आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को सहयोग मिला है। इन्होंने हमेशा ही सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक कार्यों में बढ़ चढ़ कर भाग लिया है। हिन्द समाचार पत्र समूह द्वारा जारी किये गये राहत कोषों ने हमेशा ही राष्ट्र को सहयोग दिया है। इस अवसर पर श्री सरदारी लाल आर्य जालन्धर, श्री देवेन्द्र शर्मा जालन्धर, श्री चौधरी ऋषिपाल सिंह जालन्धर, श्री स्वतंत्र कुमार पठानकोट, श्रीमती राजेश शर्मा लुधियाना, महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल नवांशहर, श्री विजय सरीन जी लुधियाना, श्री रणजीत आर्य जी जालन्धर, श्री मुनीष सहगल जालन्धर। (शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

कश्मीर तब और अब

-ले० डा० एच० कुमार कौल डायरैक्टर गाधी आर्य सी. सै. स्कूल बनाला

हिमालय पर्वत की गोद में समाये कश्मीर को 'पृथ्वी पर स्वर्ग' कहा जाता है। महात्मा गांधी ने कश्मीर को 'धर्म निरपेक्षता का शानदार उदाहरण' के रुप में परिभाषित किया था। शताब्दियों से कश्मीर हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक के रूप बुर्ज की भाँति शान से खड़ा था। आपसी प्रेम, भाईचारा, मेलजोल और एक दूसरे के लिए समर्पण की भावना थी। मैं कभी नहीं भूल सकता कि मेरे कई मुसलमान मित्र थे। उनके परिवार वालों से हमारे परिवारिक सम्बन्ध थे। हिन्दू-मुस्लिम परिवारों में गहरी मित्रता थी। सभी परिवार मिलकर ईद, दीपावाली, रक्षा बन्धन, शिवरात्रि मनाते थे। जोकि हमारी आपसी मित्रता और प्रेम का जीता-जागता उदाहरण था। दोनों सम्प्रदाय के लोग इकट्ठे एक मेज पर खाना खाते थे। एक दूसरे के सुख-दुःख में शामिल होते थे। मैं अपने जीवन की एक घटना कभी नहीं भूल सकता-'मेरा बड़ा भाई 26 वर्ष की अल्पायु में इस संसार को अलविदा कह गया तब हमारे मोहल्ले के प्रधान ने जो कि मुस्लिम धर्म से सम्बन्धित था हमारे मोहल्ले IInd ब्रिज के बाजार को बन्द रखने की अपील की और बाजार पूरी तरह बन्द रहा।'

भारत आजाद हुआ, यही से कश्मीर समस्या के लिए अंकुर फूटने लगे। कश्मीर समस्या भारत और पाकिस्तान के मध्य पड़ने वाली दरार का मुख्या कारण बनी। भारत के राज्यों को विकल्प दिया गया-: (1) वह भारत में रहना चाहते है। (2) पाकिस्तान जाना चाहते है (3) स्वतन्त्र राज्य के रुप में रहना चाहते है।

कश्मीर को छोड़कर अन्य राज्यों की स्थिति इतनी गम्भीर नहीं थी। जम्मू-कश्मीर में महाराजा हरिसिंह राज्य कर रहे थे। किन्तु जम्मू-कश्मीर में मुस्लिम समुदाय की जनसंख्या अधिक थी। वास्तव में यही से कश्मीर समस्या का प्रारम्भ हुआ। जनसंख्या को आधार बनाकर पाकिस्तान ने कश्मीर पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहा। परिणाम स्वरुप महाराजा हरिसिंह का भविष्य अनिश्चित हो गया। पाकिस्तान ने 1947 में कश्मीर घाटी पर अधिकार करने के उद्देश्य से कबालियों को भेजा। महाराजा हरिसिंह के पास कोई विकल्प नहीं था। उन्होंने भारत सरकार से सहायता की प्रार्थना की।

भारतीय सेना ने शीघ्र ही कबालियों को कश्मीर से खदेड़ दिया। भारत पाकिस्तान से युद्ध नहीं करना चाहता था। इसलिए भारत ने सुरक्षा काउन्सिल से पाकिस्तान की शिकायत की। पाकिस्तान से तुरन्त युद्ध बन्द करने के लिए कहा गया। परन्तु पाकिस्तान ने फिर से कश्मीर के हिस्से पर अपना अधिकार जताते हुए उसे 'आजाद कश्मीर' के नाम से पुकारना शुरु कर दिया। जब 1947 में भारत के कश्मीर पर पाकिस्तान ने आक्रमण किया तो ये कश्मीर के लिए सबसे बड़ी संकट की घड़ी थी। इस संकटपूर्ण घड़ी में शेख अब्दुल्ला, जिन्हें कश्मीर के शेर के नाम से पुकारा जाता था। जोकि सच्चे देशभक्त और धर्म-निरपेक्षता की प्रति मूर्ति थी, सामने आये। उन्होंने जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री पद को सुशोभित किया। उन्होंने युद्ध को रोकने और हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए अधिक प्रयास किए। मकबूल-शेरबानी जोकि एक सच्चा राष्ट्रवादी था। उसने कबालियों से कश्मीर की रक्षा के लिए अपने मित्र अब्दुल अजीज सहित अपना बलिदान दे दिया। उस समय मैं एम. ए. का विद्यार्थी था। जब कश्मीर पर सकंट के बादल मंडरा रहे थे, उस समय सुरक्षा की दृष्टि से प्रत्येक मोहल्ले में कमेटियां बनायी गयी। कमेटियों के सदस्य रात को जाग-जाग कर पहरा देते थे। उनका नारा था- ''हमलाबरो खबरदार ! हम कश्मीरी है तैयार। ''मुझे याद है वह दिन जब मेरे मुसलमान मित्र शेख अब्दुल्ला का भाषण सुनने के लिए हजरत बल अपने साथ ले गये वहाँ उन्होंने एक बहुत बड़ी रैली को सम्बोधित किया। मैं उनके भाषण से अत्यन्त प्रभावित हुआ, विशेषकर उनके भाषण का एक अंश मैं जीवन में कभी नहीं भूल सकता-कि ''कश्मीर के मुसलमानों याद रखो, जहां कहीं तुम हिन्दू लड़की को देखो, उसे शेख अब्दुल्ला की बेटी समझो उसके साथ वही व्यवहार करो। जो तुम शेख अब्दुला की बेटी के साथ करते। 'इस समय तक कश्मीर का वातावरण पूरी तरह से आपसी प्यार, सहानुभूति और आपसी तालमेल वाला था। मैं बताना आवश्यक समझता हूँ, जब कुछ हिन्दू मेरे पिता के पास आये उन्होंने मोहल्ले में कृष्ण का एक मन्दिर बनवाने की इच्छा जाहिर की। मेरे पिता के कहने पर, मुस्लिम समुदाय के लोगों की सहायता से गीता मन्दिर का निर्माण किया गया मुस्लिम समुदाय ने आर्थिक सहायता भी की। ये आपसी प्यार का वातावरण 1987 तक बना रहा।

सन् 1990 कश्मीर घाटी के लिऐ कहर का वर्ष था यही से कश्मीर पर सकंट के बादल मंडराने लगे। 1990 से पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सूडान, अरब आदि देशों ने घाटी में आंतक फैलाना शुरू कर दिया। इन सब के पीछे मुख्य सरगना पाकिस्तान ही था। आई एस आई भी पीछे नहीं रही। हिन्दू समाज त्राहि-त्राहि कर उठा, हिन्दू समाज पर अत्याचार होने लगे। धार्मिक स्थल तहस-नहस कर दिये गये चारों तरफ हिंसा लूटमार आगजनी की घटनाये होने लगी। हिन्दू समाज के वे खून के प्यासे हो गये। कश्मीर के नवयुवकों को पथभ्रष्ट करना शुरु कर दिया। भारत के युवकों को भारत के ही विरुद्ध कर दिया। जगह-जगह जिन्ना और अफजल गुरु जैसे नेताओं के पोस्टर लगा दिये गये। पाकिस्तान के झण्डे फहराये गये। उन्होंने एक मत में नारा बुलन्द कर दिया कि ''हम आजाद होना चाहते है।'' दो लाख से अधिक कश्मीरी पण्डित घाटी छोड़ने के लिए विवश हो गये। आज दो मुख्य आतंकवादी समूह लश्कर-ए-ताइबा, जैश्री-ए-मोहम्मद ने आंतकवाद का नेटवर्क तैयार किया। परन्तु ये अकेले नहीं है पाकिस्तानी सेना, आई. एस. आई. सैय्यद अली शाह गिलानी और हुर्रियत नेता इसमें शामिल है। ये भारत के विरुद्ध आग उगलते रहते है, भारत का फिर से बंटवारा करना चाहते है। अभी हाल ही में जम्मू में साम्बा, कटरा और रामनगर में आंतकी हमले किये गये। सारी व्यूह रचना पाकिस्तान द्वारा तैयार की गई थी। पाकिस्तान के एक विशेष ग्रुप ने अपने विचार कि हम अलग होना चाहते है।'' सोशल नेटवर्क पर प्रचारित कर दिये। 30 करोड़ नोटों पर भी इसे छापा। परन्तु नेटवर्क ग्रुप का कहना था, कि ये पाकिस्तान की छोटी सी कोशिश है। इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आज कश्मीर का वातावरण डर, असुरक्षा का वातावरण है। कश्मीर भारत, पाकिस्तान के तनावों का मुख्य कारण है। मेरी कई बार इच्छा हुई है मैं वापिस अपने घर कश्मीर जाऊँ अपने पुराने मित्रों और उनके परिवारों से मिलूँ। परन्तु IInd ब्रिज में हमारे जो घर थे वह विशेष समुदाय द्वारा जला दिये गये अब जाये तो कहाँ जाये ?

पाकिस्तान ताशकन्द समझौते, शिमला समझौते और सीजफायर समझौते का बार-बार उल्लंघन किया है। भारत पाकिस्तान के साथ अनेक बैठकें कर चुका है। हिंसा को रोकने के लिए कई शान्ति वार्ताएं हो चुकी हैं, अनेक नीतियां बन चुकी है। अनेक बार पाकिस्तान द्वारा शान्ति के वक्तव्य दिये जा चुके हैं, परन्तु उनका कोई प्रभाव दिखाई नहीं देता। जबकि इस बात में सन्देह नहीं है कि नवाज शरीफ ने चुनावों से पहले भारत के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने की अपनी इच्छे जाहिर की थी।

परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत रही। क्योंकि पाकिस्तान में सरकार से अधिक शक्ति सेना के पास है। सेना भारत, पाकिस्तान के मध्य शान्ति नहीं चाहती। रोज भारतीय सैनिकों को शहीद कर दिया जाता है। सीजफायर का उल्लघंन होता है। नवाज शरीफ और पाकिस्तानी सेना दो विरोधी दिशाओं में अग्रसर है। दोनों देशों के मध्य शान्ति मात्र स्वप्न बन कर रह गयी है। अब समय आ गया है, कि भारत पाकिस्तान के विरुद्ध ठोस कदम उठाए और पाकिस्तान को मुँह तोड़ जवाब दे।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

बढ़ता हुआ पाखण्ड और अन्धविश्वास

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिस समय सच्चे ईश्वर प्राप्ति और मृत्यु के रहस्य को जानने के लिए अपना गृह त्याग किया तो उन्होंने लगभग सारे देश का भ्रमण किया। जहां भी कोई साधु महात्मा और तपस्वी उन्हें मिला तो महर्षि दयानन्द ने उनके पास पहुंचने के लिए पूरा प्रयास किया। कई बार उनके रास्ते में बहुत बड़ी- बड़ी कठिनाईयां भी आई, दुर्गम पहाड़ों, बर्फीली नदियों को भी उन्हें पार करना पड़ा। अपने जीवन को संकट में ड़ाल कर भी वे ज्ञान प्राप्ति के लिए आगे बढ़ते रहे। इसी काल में उन्होंने बहुत से उन महात्माओं से भी ज्ञान प्राप्त किया जो योग की क्रियाओं को जानने वाले थे और धर्म के तत्त्व को पहचानने वाले थे लेकिन बहुत से ऐसे साधुओं से भी सम्पर्क हुआ जो लोगों को गुमराह करने वाले थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस काल में देश में बढते हुए पाखण्ड़ और अन्धविश्वास को अच्छी प्रकार से देखा था। गुरू विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर विद्या प्राप्त करने के पश्चात गुरू ने दक्षिणा के रूप में जब उनसे संसार का कल्याण करने की गुरू दक्षिणा मांगी तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और कहा कि आपकी आज्ञानुसार ही मुझे जो ज्ञान प्राप्त हुआ है उस ज्ञान को जन-जन जक पहुंचाने का जीवन भर प्रयास करता रहूंगा। गुरू से विदा लेने के पश्चात उन्होंने पाखण्ड़ के विरूद्ध आवाज उठनी शुरू कर दी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पाखण्ड़ के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए हरिद्वार में कुम्भ के मेले में अपनी पाखण्ड़ खण्डनी पताका फहराई थी। इस मेले में उन्होंने पाखण्ड़ का जोरदार खण्ड़न किया और लोगों को समझाया था कि गंगा में स्नान करने से शरीर की शुद्धि होगी लेकिन आत्मा की नहीं। आत्मा की शुद्धि तो ज्ञान से होगी । गंगा में स्नान करने से किसी के कोई पाप नहीं धुलेंगे। महर्षि मनु जी के अनुसार उन्होंने कहा–

अद्भिर्गात्राणि शुद्धयन्ति मनः ज्ञानेन शुद्धयति।
विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्धयति।।

महर्षि दयानन्द जी ने बताया कि शरीर की शुद्धि जल से होती है। मन की शुद्धि सत्य बोलने से होती है और सत्य व्यवहार से होती है। आत्मा की शुद्धि विद्या से होती है और बुद्धि की शुद्धि ज्ञान से होती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्पष्ट किया कि किये हुए कर्मों का फल चाहे वे शुभ हो या अशुभ हों अवश्य भोगना पड़ता है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन इस प्रकार के पाखण्ड़, अन्धविश्वास और सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए लगा दिया। परिणामस्वरूप उनके बहुत से विरोधी बन गए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी और आर्य समाज ने भी महर्षि दयानन्द जी के उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए इन बुराईयों के खिलाफ जमकर आवाज उठाई। इसके कारण हमारे देश में पाखण्ड़ में बहुत कमी आई थी और आम जनता में जागृति पैदा हुई थी। बहुत से लोग जो आर्य समाजी भी नहीं थे उन्होंने भी डटकर इसका विरोध किया था।

आज फिर बढ़ते हुए पाखण्ड़ और अन्धविश्वास के खिलाफ आवाज उठाने पर महाराष्ट्र के डा. नरेन्द्र दाभोलकर की स्वार्थी तत्त्वों ने गोली मारकर हत्या कर दी जो पिछले 15 वर्षों से राज्य सरकार द्वारा अन्धविश्वास उन्मूलन हेतु कानून बनवाने के लिए प्रयासरत थे। वे ऐसा कानून बनवाना चाहते थे जिससे जादू-टोना, भस्म-भभूत, चमत्कारी शक्तियां, अवतारवाद के नाम पर धोखा, ऊपरी छाया, अघोरी द्वारा तंत्र-मंत्र करना, पुत्र प्राप्ति के लिए अनुष्ठान, पत्थर आदि भूत प्रेत का मनुष्य के शरीर में प्रवेश पशुबलि आदि कानूनी रूप से वर्जित हो अपितु दण्डनीय भी हो। समाजसेवी डा. नरेन्द्र दाभोलकर मूल रूप से महाराष्ट्र के निवासी थे। उन्होंने अंधविश्वास और काला जादू के खिलाफ मुहिम चला रखी थी। उनकी मांग थी कि सरकार अंधविश्वास तथा काला जादू विरोधी विधेयक पास करे। वे इसके लिए वातावरण तैयार कर रहे थे। गांव-गांव जाकर लोगों को जागृत करना तथा ऐसी घटनाओं को पत्र-पत्रिकाओं में छपवाना यह काम वे निरन्तर करते रहे थे। अफसोस है कि डा. नरेन्द्र दाभोलकर इन पाखण्ड़ियों का शिकार हो गए। आज आवश्यकता है सामूहिक रूप से अंधविश्वास के खिलाफ मुहिम छेडने की। आर्य समाज इस कार्य में अग्रिम भूमिका निभा सकता है। ऋषि दयानन्द ने पाखण्ड खण्ड़िनी पताका फहराई थी उनके सतत् प्रयास से देश में जागृति आई थी लेकिन अभी बहुत कुछ करना बाकी है। दाभोलकर की हत्या के एक दिन बाद महाराष्ट्र सरकार ने अन्धविश्वास और काला जादू विधेयक पास कर दिया। हम सबको मिल कर अन्य प्रान्तों की सरकारों पर दबाव डलना चाहिए ताकि पूरे देश में पाखण्ड़ के खिलाफ कानून बनाया जा सके और ऐसे लोगों को सजा दिलाई जा सके।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

www.thearyasamaj.org

कस्मै देवाय हविषा विधेम

-सुशील वर्मा गली मास्टर मूल चन्द, फाजिल्का

अग्निहोत्र पद्धति में सबसे पहले ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्र निर्धारित किए गए हैं। जैसे ही प्रार्थना प्रारम्भ करते हैं तो हृदय में नास्तिकता-पूर्ण संकल्प विकल्प शुरु हो जाते हैं और उन्हें शान्त करने हेतु ''कस्मै देवाय हविषा विधेम'' पद उत्कृष्ट रुप में प्रकट हो उठते हैं। स्वामी जी की विलक्षणता का परिचय यहीं से उजागर हो जाता है कि उन्होंने प्रकरणानुसार इसी एक पद का अर्थ अलग-अलग रूप में किया। उन्होंने 'हवि' का अर्थ घृत, आज्यम्, सामग्री, सर्पि: आदि नहीं किये अपितु उन्होंने उपासक के हृदय के प्यार को हवि का नाम दिया है। उपासना प्रकरण में इस प्रेम से अधिक सुन्दर अर्थ क्या होगा। चार मंत्रों में इस पद का विशलेषण करें:-

दूसरा मंत्र :-हिरण्यगर्भ.....हविषा विधेम (यजु, 13/4)

'उस परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें। उपासक के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास के अतिरिक्त सहारा अथवा पतवार क्या होगा ? क्योंकि यह योगाभ्यास उस परमसत्ता के साथ योग कराने का अति उत्तम साधन है और प्रभु भक्ति प्रकरण में सबसे उचित व्याख्या है। उपासक अपना अभिमान दूर करके उस परमसत्ता को स्वीकार करता हुआ अपने हृदय प्रेम की आहुति देता है।

तीसरा मन्त्र-य आत्मदा बलदा.....हविषा विधेम (यजु. 25/13)

''हम लोग उस सुख स्वरूप सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्त: करण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

जब मनुष्य परमात्मा का विराट रूप देखता है तो वह अभिमान रहित हो जाता है। वह 'आत्मदा-बलदा' है, वही दाता है, वही आत्म-ज्ञान का दाता है, उस की छाया अर्थात उसका आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है उसकी छाया ही अमृत है अथवा मौत ही मौत। उस प्रभु के बिना कोई साधन नहीं, कोई अन्य रास्ता नहीं।

''तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्य: पन्थाविद्येतऽयनाय''

इसलिए आत्म-ज्ञान की प्राप्ति के लिए आत्मा की आहुति आवश्यक है। शरीर आत्मा और समाज के बल के लिए अन्त:करण का बलवान होना अति आवश्यक है। ये तीनों बल मिलकर ही वास्तविक बल कहलाता है, क्योंकि शारीरिक बल के होने पर भी आत्मिक बल के अभाव में मनुष्य बलवान होते हुए भी भीरु और कायर होता है और आत्मिक बल होते हुए भी शारीरिक बल के अभाव में मनुष्य रोगी हो कर कुछ भी करने में असमर्थ हो जाता है। इसीलिए यहाँ उन्होंने अर्थ किया कि उस ज्ञानवान, सुखस्वरूप, सुखप्रदाता परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा व अन्त:करण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा का पालन करने में तत्पर रहें अर्थात् सम्पूर्ण समर्पण उस परमसत्ता के प्रति।

चौथा मन्त्र-य: प्राणतो.....हविषा विधेम। यजु 23/3

''हम उस सुख स्वरूप सकलैश्वर्य के देने हारे परमात्मा की उपासना अर्थात अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञापालन में समर्पित करके भक्ति विशेष करें।''

उपासक को इस मन्त्र से ज्ञान हुआ कि वह परमात्मा समस्त ब्राह्मण्ड का एक ही स्वामी है। वह समस्त चराचर जगत का मालिक है, अधिष्ठाता है। तब वह कहता है ''कस्मै देवाय हविषा विधेम''। अन्दर से आवाज उठती है कि हे उपासक तू अपनी सकल सामग्री को हवि बना ले और उस प्रभु के आहुत कर दे और वह विचार करता है कि अब तो मैं ईश्वर प्रणिधान कर चुका। अपना सर्वस्व उस प्रभु के समर्पित कर दूँ।

इसी श्रृंखला में पाँचवाँ मन्त्र ''येन द्यौरुग्रा...हविषा विधेम।'' (यजु 32/6)

हम लोग उस सुखदायक कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

साधक को प्रतीत होने लगता है कि सभी लोक सूर्य नक्षत्र आदि अपनी मर्यादा, अवधि व स्व परिधि में विचर रहे हैं। वह सभी का विधाता है और तू तो किसी का भी विधाता नहीं है, मात्र नरकीट ही है तब वह पुकार उठता है ''कस्मै देवाय हविषा विधेम''-सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें। अत: हम सब सकंल्प विकल्प को छोड़ कर अपने पूर्ण सामर्थ्य से हवि अर्पित करें। यदि तू अपने सामर्थ्य से अपने आप को समर्पित कर देता तो फिर देर नहीं कि वह तेरा सहायक न हो क्योंकि वेद का आदेश है-न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा,

सारांश यही कि आकाश के तुल्य व्यापक जो परमेश्वर है उस की भक्ति करो। वही हमारा स्वामी है, अधिष्ठाता है। हम केवल मात्र उसी का आश्रय लें, उसे ही पुकारे क्योंकि हमें मालूम हो गया है कि समस्त संसार आप ही के दर का भिखारी है। वही हमारा गुरु, आचार्य राजा और न्यायधीश है। यही है इन मंत्रों की सार्थकता और स्वामी जी की विलक्षणता कि उन्होंने इन मंत्रों का विनियोग कर अग्निहोत्र कर्म के लिए याज्ञिक को अहंकार रहित बना उस श्रेष्ठतम कर्म का योग्य पात्र बनाया।

हम सदा सद्गुणों को ग्रहण करें

-ले० डा. अशोक आर्य, मण्डी डबवाली

आज के युग में गुणों से भरे मार्ग पर चलने वाले लोग उँगलियों पर गिने जा सकते हैं। गुणों के ह्रास से ही संसार आज अध:पतन की ओर जा रहा है। अपने अधिकार पाने की एक दौड़ सी लगी हुई है। किसी में भी कर्त्तव्य की ओर देखने व उसे समझने तथा उस पर चलने की भावना ही नहीं रही। आज स्थिति यहाँ तक पहुंच गयी है कि एक बालक, जिसे पाल पोस कर बड़ा किया जाता है, पढ़ाया लिखाया जाता है। अच्छी प्रकार से उस का भरण पोषण किया जाता है तथा उत्तम वस्त्र उसे पहनने को दिए जाते हैं। यह सब कर्त्तव्य पूर्ण करने में माता पिता जीवन भर की कमाई लगा देते हैं। जब उनकी आयु ढल जाती है, वह बुढ़ापे की अवस्था में पहुंचता है, अनेक रोग उसे घेर लेते हैं, इस अवस्था में उन्हें सहारे की आवश्यकता होती है। इसी अवस्था में वही संतान, जिसे बनाने के लिए उसने अपना जीवन खपा दिया, आज उसे दुत्कारती है तथा यह कहने पर कि माता पिता ने तेरा पालन किया है तो उत्तर देती है कि यह तो उनका कर्त्तव्य था, हमारे लिए नहीं अपने कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए यह सब किया था, अपनी नाक बचाने के लिए यह सब किया था। जब कहा जाता है कि तुम्हारा भी इन के लिए कुछ कर्त्तव्य बनता है, तो उत्तर होता है कि हमारा अपने बच्चों के लिए भी कर्त्तव्य है, उसे पूरा करें या इन को संभालें। जिस माता पिता ने उसे यह संसार दिखाया, आज उनकी देख रेख करने वाला कोई नहीं, क्योंकि हम ने संतान का पालन तो किया किन्तु उसे सुसंतान न बना पाए। अच्छे गुण उनमें नहीं-भर सके। ऋग्वेद के मन्त्र ५.८२.५ में प्रभु से प्रार्थना की गयी है कि हे प्रभु, हमें अच्छे गुण ग्रहण करने की शक्ति दो। मन्त्र मूल रूप में इस प्रकार है :

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव॥ ऋग्वेद ५.८२.५॥

हे संसार के उत्पादक, कल्याणकारी परमेश्वर, आप हमारे सारे दुर्गुण, दुर्व्यसन तथा दुर्गुणों को दूर कीजिये और जो कल्याणकारी गुण, कर्म, पदार्थ हैं, वह हमें दीजिये। इस मन्त्र में वैदिक संस्कृति के लक्षण बताये गए हैं। संस्कृति क्या है, इस का अर्थ क्या है ? आओ पहले इसे जाने, फिर हम आगे बढ़ेंगे। संस्कृति नाम है संस्कार का। संस्कार से परिष्कार होता है तथा तथा परिष्कार से संशोधन होता है। अत: संस्कार, परिष्कार व संशोधन को ही हम संस्कृति कह सकते हैं। बालक का जन्म होता हैं, उसे कुछ भी ज्ञान नहीं होता, माता, पिता उसे संस्कार देते हैं, विगत संस्कारों को परिष्कृत कर, उनका संशोधन करते हैं, तब कहीं जा कर वह बालक एक उत्तम मानव की श्रेणी में आ पाता है। इसलिए हमारी संस्कृति के आधार हैं संस्कार, परिष्कार तथा संशोधन। इसे समझाने के लिए हम कृषि या खेती का बड़ा ही सुन्दर उदाहरण देख सकते हैं:-

किसान अपने खेतों में से अनावश्यक घास फूंस, जो स्वयं ही उग आता है तथा भूमि की उर्वरक शक्ति का शोषण करने लगता है, को खोद कर निकाल बाहर करता है। तत्पश्चात अपने खेत को समतल कर इस में उत्तम प्रकार के बीजों को डालता है। इस खेती में समय समय पर खाद व पानी देकर इसे पुष्ट भी किया जाता है। इससे उगने वाले पौधों में अच्छे गुणों का आधान होता है तथा अच्छे फल स्वरूप इस का परिणाम किसान को मिलता है। कुछ ऐसा ही कार्य संस्कृति करती है। बालक के अन्दर जितने अवांच्छनीय तत्व होते हैं, जितने दुर्गुण होते हैं या किसी भी प्रकार की कमियां बालक में होती है, संस्कृति उन सब को दूर कर, उनके स्थान पर अच्छे गुणों को प्रतिस्थापित करती है। बस इस कार्य को ही हम संस्कृति कहते हैं। हम संस्कृति को संक्षेप में इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं ''दुर्गुण निवारण और सद्गुण स्थापन ही संस्कृति है।'' **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

www.thearyasamaj.org

भारतीय संस्कृति में गुरु शिष्यों की परम्परा

-ले० डा० भवानी लाल भारती, 315 शंकर कालोनी श्री गंगानगर

भारतीय संस्कृति में विद्या एवं ज्ञान दाता गुरू को माता-पिता के समकक्ष आदर एवं सम्मान प्राप्त है। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव के पश्चात् आचार्य को देवता स्वरूप मान्यता प्राप्त है। यहां तक कि गुरू को ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के तुल्य पूज्य कहा जाता है। मध्यकाल में जब सन्तों के मत की प्रबलता रही तो गुरू को गोविन्द (भगवान्) से भी ऊंचा दर्जा दिया गया। कारण कि भक्त को भगवान् तक पहुंचाने में गुरू की प्रमुख भूमिका रहती है। योग दर्शन में परमात्मा को परम गुरू बताया गया क्योंकि वह देश और काल के बंधन में नहीं आने वाला शाश्वत गुरू तथा यथार्थद्रष्टा है।

रामायण काल में आदर्श गुरू शिष्य सम्बन्धों का उल्लेख मिलता है। अयोध्या के राजकुमारों (राम और लक्ष्मण) ने गुरू विश्वामित्र के आश्रम में रहकर न केवल अध्यात्म विद्याएं सीखीं, बला और अतिबला नामक अस्त्र-शस्त्रों में भी निपुणता प्राप्त की। जब दोनों राजकुमार जनकपुरी प्रस्थान करते हैं तो गुरू वसिष्ठ उनके संरक्षक बनते हैं। गुरू के प्रति आदर्श शिष्टाचार की अनेक झलकियां, रामचरित मानस में चित्रित हैं। गुरू के शैया त्याग से पहले राम का उठना और लक्ष्मण का दोनों से पहले उठ जाना शिष्टाचार का आदर्श है-

गुरू तें पहले हिं जगतपति
जागे राम सुजान॥

पुरातन भारत में यह गुरू शिष्य परम्परा निर्बाध चलती रही। यहां हमें क्रोधी दुर्वासा ऋषि के दर्शन होते हैं जो अपने बृहत् शिष्य समुदाय के साथ निरन्तर भ्रमण करते हैं। द्वापर में कृष्ण के गुरू उज्जैन में निवास करने वाले महर्षि सान्दीपनी का उल्लेख मिलता है जिनके समीप विद्याध्ययन कर कृष्ण ने विभिन्न विद्याओं में कुशलता प्राप्त की। यदि हम उनके द्वारा कथित गीता की ही चर्चा करें तो पता चलता है कि कृष्ण का आध्यात्मिक अध्ययन कितना गूढ़ तथा गहन था। तथापि महाभारत काल तक आते-आते गुरू-शिष्य परम्परा में दोष आते जाते थे। पितामह भीष्म ने वेतन देकर आचार्य द्रोण को कौरव-पाण्डव राजकुमारों को शास्त्रास्त्र विद्याएं सिखाने के लिए नियुक्त किया। आचार्य की आर्थिक मज़बूरियां थीं। जन्मना जाति का चलन बढ़ रहा था। बनवासी और पिछड़े वर्ग के बालकों को शिक्षा से वंचित रखा जाता है। भील पुत्र एकलव्य की उस प्रार्थना को द्रोणाचार्य ने ठुकरा दिया जब उसने राजकुमार के समान शस्त्राभ्यास सिखाने के लिए उन्हें आग्रह किया। राजकुमारों की शस्त्रास्त्र प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए जब कर्ण ने प्रार्थना की तो उसे सूत पुत्र (सारथी अधिरथ का बेटा) कह कर अपमानित किया। तथापि कर्ण ने साहस नहीं खोया। उसने अपने पुरुषार्थ की दुहाई देकर कहा-

सूतो वा सूत पुत्रो वा योवा
कोवा भवाम्यहम्।
दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं
तु पौरुषम्॥

किसी कुल में जन्म लेना विधाता के अधीन होता है जबकि पौरुष तो स्वोपार्जित होता है।

मध्यकाल के आदर्श आचार्यों में विष्णु गुप्त चाणक्य का नाम अग्रजन्य है। चाणक्य ने पश्चिमोत्तर प्रदेश के तक्षशिला विश्व विद्यालय में शिक्षा पाई थी तथा वहां राजनीति, अर्थनीति आदि का अध्यापन भी किया था। उनके तेजस्वी शिष्य चन्द्रगुप्त ने अत्याचारी नन्दवंश का उच्छेद किया और गौरवशाली मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। नालन्दा, तक्षशिला, ओदन्तपुरी आदि तत्कालीन विश्वविद्यालयों में अध्यापनरत गुरूओं की आदर्श परम्परा को बौद्ध ग्रन्थों में विस्तार से चित्रित किया गया है। शिवाजी तथा छत्रसाल आदि देश, धर्म तथा संस्कृति के सेवकों को कर्त्तव्य पाठ पढ़ाने वाले समर्थ स्वामी रामदास समान आदर्श गुरू थे।

पंजाब में गुरू नानक तथा परवर्ती सिक्ख गुरुओं ने भगवद् भक्ति के साथ-साथ स्वजाति प्रेम तथा स्वाभिमानपूर्ण जीवन जीने की कला दिखाई। गुरू अर्जुन देव, गुरू तेग बहादुर तथा गुरू गोबिन्द सिंह के त्याग और बलिदान ने सिक्ख (शिष्य) समुदाय में लोकोत्तर वीरता, शूरता तथा सहिष्णुता के भाव उत्पन्न किए। गुरू गोबिन्द सिंह की निम्न पंक्तियों में उनकी विनम्रता पदे झलकती हैं।

जे नर मोहि परमेसर उच्चरहिं।
ते नर घोर नाक महं परहिं।
हम हैं परम पुरुष के दासा।
आर्य देखन जगत तमासा।

गुरू महाराज स्वयं को परम पुरुष का दास कहते हैं। यह उनकी विनम्रता ही थी। यही कारण है कि इन गुरुओं ने हमारे सांस्कृतिक और धार्मिक ग्रन्थों (यज्ञोपवीत, तिलक आदि) की रक्षा की। यह आदर्श गुरुओं की आदर्श सीख के कारण ही सम्भव हो सका।

उन्नीसवीं शताब्दी में गुरू शिष्य के आदर्श सम्बन्धी स्वामी विरजानन्द और उन्हें प्रज्ञावान शिष्य स्वामी दयानन्द में तथा परमहंस रामकृष्ण तथा उनके विश्व विश्रुत ख्यातनामा शिष्य स्वामी विवेकानन्द में दिखाई पड़ते हैं। स्वामी विरजानन्द संस्कृत व्याकरण के अद्वितीय पण्डित थे। उन्होंने अपने शिष्य दयानन्द को न केवल सर्वशास्त्रों में निपुण बताया उन्हें पाखण्डखण्डन, साम्प्रदायिकता के उच्छेद तथा स्वराज्य स्थापना में तत्पर रहने का मंत्र भी दिया। अपने ग्रन्थों की समाप्ति पर उन्होंने गुरू विरजानन्द को परमहंस परिवाज्रकाचार्य तथा महान् विद्वान जैसे अलंकारों से विभूषित किया है।

परमहंस रामकृष्ण ने युवा नरेन्द्र को विभिन्न शंका समूहों से उभार कर सच्चे अध्यात्म पथ का पथिक बनाया और नर सेवा में ही नारायण की सेवा देखने के लिए कहा। उन्होंने ही प्रो. मैक्समूलर जैसे प्राच्य विद्या विशारद से अपने गुरू की जीवनी लिखने की प्रेरणा दी। महामना मालवीय जी का काशी हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना का मुख्य उद्देश्य भी आदर्श गुरू शिष्य परम्परा की स्थापना करना ही था। उनके कार्यकाल में डा० राधा कृष्ण सदृश दर्शन के पण्डित, भाषा शास्त्र के विद्वान्, डा. धीरेन्द्र वर्मा तथा डा० बाबू राम सक्सेना जैसे भाषा विज्ञान के पण्डित आदर्श शिक्षक के रूप में विख्यात हुए। आज भी पुरातन गुरू शिष्य सम्बन्धों की उज्जवल परम्परा समाप्त नहीं हुई है।

पृष्ठ 4 का शेष- हम सदा.....

ऊपर के प्रकाश को सम्मुख रखते हुए इस मन्त्र में कहा गया है कि जितने दुर्गुण, दुर्विचार या जितने भी दुःख देने वाले तत्व हैं, हे प्रभु, वह सब हम से दूर कीजिये तथा जितने सद्गुण, सद्विचार अथवा शुभ तत्व हैं, वह सब हमें प्रदान कीजिये। इस प्रकार गुणों को प्राप्त करने व दुर्गुणों को दूर करने का कार्य यह संस्कृति मानव के जीवन पर्यंत करती रहती है, यह क्रम चलता रहता है। तब ही तो मानव दुराचारों तथा पापाचारों से अपने को बचाते हुए सद्गुणों की प्राप्ति की ओर बढ़ता है, इन में प्रवृत होता है, इन्हें ग्रहण करता है। जब सद्गुणों में यह प्रवृति बद्धमूल हो जाती है, समा जाती है, तब मानव में से सब प्रकार की दुर्भावनाओं, दुराचारों का नाश हो जाता है तथा अच्छे गुण, अच्छे संस्कारों में निरंतर वृद्धि होती रहती है। इस प्रकार अच्छे गुणों को प्राप्त करते हुए मानव मानवता से देवत्व की ओर बढ़ता ही चला जाता है। जिस मानव में ऐसे गुणों की प्रचुरता आ जाती है, संसार उन्हें युगों-युगों तक याद करता है, उसके पदचिन्हों पर चलने का प्रयास करता है तथा उसे देवता तुल्य आदर सत्कार देने लगता है। अतः हम मन्त्र की भावना को अपनाते हुए संस्कृति के भाव को आत्मसात करते हुए अपने दुर्गुणों को त्यागें तथा अच्छे गुणों को ग्रहन कर संसार के सम्मुख अच्छा उदाहरण रखें।

www.thearyasamaj.org

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को पंजाब की आर्य समाजों एवं शिक्षा संस्थाओं द्वारा उत्तराखंड प्रधानमंत्री रिलीफ फंड मध्ये प्राप्त राशि की सूची

1.	श्री सुदर्शन शर्मा जी सभा प्रधान	100000-00
2.	श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार	11000-00
3.	आर्य समाज गांधी नगर-2 जालन्धर	1000-00
4.	आर्यसमाज बंगा रोड फगवाडा	2000-00
5.	आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर	1100-00
6.	आर्य समाज बुडलाडा	2100-00
7.	आर्य समाज मोगा	21000-00
8.	आर्य माडल हाई स्कूल मोगा	51000-00
9.	आर्य समाज मुक्तसर	1100-00
10.	आर्य कन्या सी.सै.स्कूल बस्ती नौ जालन्धर	51000-00
11.	स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	11000-00
12.	आर्य समाज गांधी नगर-1 जालन्धर	5000-00
13.	आर्य समाज चौक बठिंडा	11000-00
14.	आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना	21000-00
15.	आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना	5100-00
16.	आर्य समाज जीरा	5000-00
17.	आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल लुधियाना	5100-00
18.	आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर	11000-00
19.	आर्य समाज मुक्तसर	33160-00
20.	आर्य समाज नवांशहर	31000-00
21.	डी.ए.एन.कालेज आफ एजुकेशन नवांशहर	31000-00
22.	बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर	31000-00
23.	आर.के.आर्य कालेज नवांशहर	31000-00
24.	डा.आशानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर	11000-00
25.	डब्ल्यू एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर	3100-00
26.	डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर	22656-00
27.	डब्ल्यू एल.आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर	8000-00
28.	डी.ए.एन. आर्टस एंड क्राफ्ट कालेज नवांशहर	11000-00
29.	अनुपम आर्य प्ले वे स्कूल नवांशहर	5000-00
30.	श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला	4200-00
31.	स्वामी गंगागिरी आर्य जनता सी.सै.स्कूल रायकोट	2000-00
32.	दोआबा आर्य सी.सै स्कूल नवांशहर	11000-00
33.	आर्य समाज गौशाला रोड फगवाडा	11000-00
34.	आर्य समाज मंदिर बैक फील्डगंज लुधियाना	2100-00
35.	आर्य समाज मंदिर आर्य समाज चौक पटियाला	5000-00
36.	स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कालेज रायकोट	15000-00
37.	आर्य समाज सरहिन्द	2100-00
38.	आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर	31000-00
39.	श्री जगदीश चन्द नारंग लुधियाना	5100-00
40.	आर्य सी.सै.स्कूल लुधियाना	5100-00
41.	श्री लाल बहादुरशास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला	50000-00
42.	श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला	50000-00
43.	आर्य समाज वेद मंदिर बस्ती दानिशमंदा जालन्धर	2100-00
44.	आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना	3100-00
45.	आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ जालन्धर	1000-00
46.	डी.एन.माडल सी.सै.स्कूल मोगा	101000-00
47.	डी.एम.कालेज आफ एजुकेशन मोगा	25000-00
48.	डी.एम.कोलजेट सी.सै.स्कूल मोगा	25000-00
49.	आर्य कालेज लुधियाना	51000-00
50.	आर्य समाज औहरी चौक बटाला	11000-00
51.	आर्य समाज औहरी चौक बटाला	4100-00
52.	आर्य समाज गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर	5000-00
53.	आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा	11000-00
54.	आर्य माडल हाई स्कूल बठिंडा	5100-00
55.	आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर	11000-00
56.	एस.एस.एन.आर्य हाई स्कूल रामां	5100-00
57.	आर्य हाई स्कूल मंडी फूल	5100-00
58.	आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर	6500-00
	कुल योग	999116-00

कुष्ठ रोगियों को आर्य समाज द्वारा खाद्यान्न व वस्त्र वितरण

आर्य समाज कोटा में मानवता की सेवा में किया जाने वाला हर श्रेष्ठ कार्य यज्ञ है। पीड़ितों की सेवा करना हमारा सबका कर्त्तव्य है। कुष्ठ रोगी समाज में तिरस्कृत हैं, इन्हें अपनापन देकर व इनका सहयोग कर इनके चेहरे पर भी मुस्कान लाने से मनुष्य को आत्मिक संतुष्टि मिलती है।

उक्त विचार हरिओम नगर बस्ती में स्थित कुष्ठ रोगियों के परिवारों को आर्य समाज द्वारा खाद्य पदार्थ व वस्त्र वितरित करते हुए आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने व्यक्त किए।

आज अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में एक दल जिसमें अग्निमित्र शास्त्री, रामप्रसाद याज्ञिक, शोभाराम आर्य, दर्शन पिपलानी, शम्मी कपूर, श्योराज वशिष्ठ, राजीव आर्य आदि ने कुष्ठ रोगियों के बीच पहुंचे।

इस अवसर पर बस्ती में उपस्थित जनों ने इस सेवा कार्य के लिये कार्य समाज का आभार व्यक्त किया। **-रामप्रसाद याज्ञिक**

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव 3 अक्तूबर 2013 से 6 अक्तूबर 2013 तक मनाया जा रहा है। इसमें मंगल यज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा पुरोहित पं. बालकृष्ण शास्त्री जी होंगे। आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री राजू जी वैज्ञानिक दिल्ली एवं श्री दिनेश जी पथिक अमृतसर तथा स्थानीय संज्ञीतज्ञों के मनोहर भजन होंगे। समय प्रातः 7:30 से 9:30 तथा रात्रि 7:30 से 9:30 बजे होगा। समापन समारोह 6 अक्तूबर 2013 दिन रविवार प्रातः 8:30 से 12:30 बजे तक होगा। सभी धर्माभिलाषी सज्जन सादर आमंत्रित हैं। **-विजय सरीन प्रधान आर्य समाज**

www.thearyasamaj.org

कच्ची बस्ती के गरीब बच्चों को खाद्य सामग्री वितरित

कोटा में आर्य समाज व पंजाबी जन सेवा समिति के कार्यकर्त्ता आज वीर सावरकर नगर कच्ची बस्ती में पहुंचे और वहां रह रहे निर्धन परिवारों के बच्चों को एकत्रित कर उनमें खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। बच्चों के बीच बैठकर आर्य समाज के विद्वान अग्निमित्र ने गायत्री मंत्र का पाठ करवाया। आर्य समाज की जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि बच्चों में निश्चलता व निर्मलता होती है तथा हमें इनकी सेवा व सहायता कर शिक्षा के प्रति इन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। पंजाबी जन सेवा समिति के अध्यक्ष दर्शन पिपलानी ने कहा कि हम समय-समय पर यहां आकर इन बच्चों के बीच खुशियां बांटते हैं। इस अवसर पर आर्य समाज के रामप्रसाद याज्ञिक, पं. शोभाराम आर्य, पंजाबी जनसेवा समिति के उपाध्यक्ष शम्मी कपूर व अन्य उपस्थित थे।

बस्ती की श्रीमती रेखा ने कहा कि आर्य समाज व पंजाबी समाज द्वारा पिछले कई वर्षों से इन बच्चों में भोजन, वस्त्र व पुस्तकें वितरित की जाती रही है। मैं भगवान से प्रार्थना करती हूं कि चड्ढा जी को भगवान दीर्घायु करे ताकि उनके नेतृत्व में समाज के अन्य वर्ग सेवा सहयोग सहायता करते रहें। -दर्शन पिपलानी

विदेश में पहली बार 108 कुण्डीय गायत्री माहयज्ञ

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में विदेश में पहली बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन कनाडा के आर्यसमाज मारखम, टोरंटो के विशाल प्रांगण में बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। भारी संख्या में उपस्थित श्रोताओं ने जहाँ गायत्री के महत्व को समझा वही यज्ञ की महिमा को भी आत्मसात किया।

अध्यात्म पथ के यशस्वी संपादक एवं प्रख्यात लेखक आचार्य चन्द्रशेखकर शास्त्री जी ने विशाल जन-समुदाय को प्रभावपूर्ण शैली में सम्बोधित करते हुए कहा कि यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि, सभी शुभकामनाओं की पूर्ति, दान, संगतिकरण और देव पूजा से प्रकृति, ईश्वर से निकटता, सद् विचारों में वृद्धि और अंततः मोक्ष की प्राप्ति होती है। यज्ञ ही त्रिभुवन की नाभि है। यज्ञ में स्वाहा, इदं न मम और सुगंधि का विशेष महत्व है।

गायत्री मां के समान हमारा कल्याण करती है, हमें सुबुद्धि प्रदान करती है और हमें सन्मार्ग पर चलाती है। सविता देव हमें ओजस्विता प्रदान करते हैं और हमारे दुःखों को दूर कर सदैव सुख और आनन्द प्रदान करते हैं। गायत्री के जाप से व्यक्ति अन्नमय कोश से आनन्दमय कोश की ओर प्रस्थान करता है। अतः हमें सदैव एकाग्र मन से गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए। इस यज्ञ के मुख्य यजमान श्री भास्कर पटन एवं श्रीमती लता पटन थे। इस बृहत यज्ञ में 200 परिवारों ने यजमान बनकर पुण्यलाभ किया तथा हजारों श्रद्धालुओं ने विश्व शांति एवं मानव कल्याण के लिए आहुतियाँ प्रदान की। अनेक लोगों ने जहाँ गायत्री जाप का संकल्प लिया वहाँ अनेक यजमानों ने यज्ञ करने का व्रत लिया।

समाज के प्रधान श्री सुदर्शन बेरी ने आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी का सम्मान कर उनका धन्यवाद करते हुए कहा कि उनकी वाणी में ओज है तथा उनके विचार प्रेरक, उद्बोधक और शांति देने वाले हैं। ऐसे विद्वान को अपने बीच पाकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं तथा उनसे प्रार्थना करते हैं कि अगले वर्ष भी वे यहाँ पधारकर हमारा आध्यात्मिक मार्गदर्शन करें। सप्तदिवसीय इस गायत्री महायज्ञ को सफल बनाने में सर्व श्री सतपाल चोपड़ा, ओम शर्मा, प्रीतेश, रूपल, रेशमा, दिलीप, चाँदनी आदि एवं वैदिक कल्चरर सेंटर के सभी सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के प्रवचन से श्रोता इतने मंत्रमुग्ध हुए कि वे आचार्य श्री को स्थायी रूप से वहीं रहने का आग्रह करने लगे, जिसे आचार्य जी ने विनम्रता पूर्वक अस्वीकार कर दिया। विशाल ऋषिलंगर के साथ यह महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

-डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया

आशानन्द जी आर्य का श्रद्धांजलि समारोह

आर्य समाज मन्दिर हबीब गंज अमरपुरा लुधियाना के तत्वावधान में आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता श्री आशानन्द जी आर्य का श्रद्धाजंलि समारोह 29-9-2013 दिन रविवार को सभी आर्य समाजों एवं सभी शिक्षण संस्थाओं की ओर से मनाया जा रहा है। श्री आशानन्द जी आर्य का 14-9-2013 को निधन हो गया था। उनकी आत्मिक शांति के लिए रखे गये इस समारोह में 9:00 से 10:15 तक हवन होगा। इसके पश्चात 10:30 से 12:00 बजे तक श्रद्धांजलि समारोह होगा जिसमें सभी गणमान्य लोग अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

आर्य समाज पटियाला में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज वेद मन्दिर, आर्य समाज चौक पटियाला द्वारा वेद प्रचार सप्ताह समारोह का आयोजन 12 सितम्बर से 15 सितम्बर 2013 तक प्रधान श्री श्याम लाल आर्य के नेतृत्व में किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ वेद मंत्रों के द्वारा पं. श्री ओंकार नाथ शास्त्री जी ने करवाया। इस कार्यक्रम में पं. जगत वर्मा भजनोंपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने ईश्वर भक्ति तथा देशभक्ति के भजनों के द्वारा ज्ञान की अमृत वर्षा की। इस कार्यक्रम में श्री विजय शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने प्रवचनों द्वारा आर्य समाज तथा वेदज्ञान की चर्चा की।

इस कार्यक्रम में परम पूज्य स्वामी ब्रह्मवेश जी, अध्यक्ष गंगा डेरा, आश्रम छींटावाला विशेष तौर पर पधारे। इस कार्यक्रम दौरान मंच संचालन महामंत्री डा. वीरेन्द्र कौशिक तथा आये हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद कार्यकारी प्रधान श्री राज कुमार सिंगला जी ने किया। इस कार्यक्रम दौरान श्री वेद प्रकाश तुली, उपप्रधान श्री दर्शन कुमार, प्रचार मंत्री देवेन्द्रनाथ, गुलाब सिंह, अश्विनी मैहता, तथा सभी शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाचार्य, अध्यापकगण तथा विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़ कर योगदान दिया।

-डा. वीरेन्द्र कौशिक महामंत्री आर्य समाज पटियाला

दयानन्द मठ दीनानगर की हीरक जयंती

दयानन्द मठ दीनानगर की हीरक जयंती 18, 19, 20 अक्तूबर 2013 को बड़ी धूमधाम से मनाई जा रही है। 1937 चैत्र शुल्क प्रतिपदा को लौह पुरुष फील्ड मार्शल स्वामी स्वतंत्रानंद जी महाराज ने दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना की थी। इस तरह इस मठ को स्थापित हुये 75 वर्ष होने जा रहे हैं। इसलिये सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि वह इस हीरक जयंती समारोह में बढ़ चढ़ कर भाग लें।

पृष्ठ 1 का शेष- आर्य प्रतिनिधि सभा.....

श्री साथी विजय कुमार जी मोगा, श्री प्रविन्द्र चौधरी बटाला, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जालन्धर, रजिस्ट्रार श्री अशोक पुरुथी एडवोकेट, वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री देशबन्धु जी चोपड़ा फगवाडा, अधिष्ठाता साहित्य विभाग श्री सोहन लाल जी सेठ जालन्धर, अन्तरंग सदस्य प्रियतम देव जी मोगा, श्री विपिन शर्मा जी जालन्धर, श्री कमल किशोर जालन्धर, श्री वेद आर्य जी जालन्धर, श्री राजेन्द्र कौडा जी रायकोट, श्री शादी लाल जी महेन्द्रु बंगा, श्री सुदेश कुमार जी जालन्धर, डा. वीरेन्द्र कौशिक पटियाला, श्री ओम प्रकाश अग्रवाल जालन्धर, श्री भारत भूषण मेनन, श्री वेद प्रकाश जी बठिंडा, श्री सी.मारकंडा जी तपा, श्री जगदीश मित्र जी धारीवाल, श्रीमती ज्योति नंदा जी गुरदासपुर, श्रीमती इन्दुमति जी गौतम नवांशहर, श्री कुलदीप कौशिक जी जालन्धर, श्री सत्यप्रकाश जी उप्पल मोगा भी मौजूद थे।

इससे पूर्व प्रातः 9.30 बजे सभा कार्यालय में स्थित यज्ञशाला में अन्तरंग सभा के सभी सदस्यों ने हवन यज्ञ किया जिसके ब्रह्मा श्री पंडित सुरेश शास्त्री जी थे। सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी और सभा महामंत्री जी ने यजमान बन कर यज्ञ सम्पन्न करवाया। संयोग से इसी दिन सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी का जन्म दिवस भी था जिस पर विशेष मंत्रों के द्वारा आहूतियां अर्पित करके उनकी दीर्घायु के लिये कामना की गई।

www.thearyasamaj.org

 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा में आधुनिक सुविधाओं में सुसज्जित सभागार का एक भव्य दृश्य।

सभागार के शुभारम्भ अवसर पर ज्योति प्रज्जवलित करने से पूर्व वैदिक मन्त्रोच्चारण करते हुए सभा महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज, पद्म श्री विजय चोपड़ा जी मालिक हिन्द समाचार पत्र समूह श्री चौधरी ऋषि पाल सिंह जी, रजिस्ट्रार श्री अशोक पुरूथी जी एडवोकेट, सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री स्वतन्त्र कुमार जी, श्री सुधीर शर्मा जी सभा कोषाध्यक्ष।

सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के जन्म दिवस पर उन्हें फूलों का गुलदस्ता भेंट करते हुए सभा अधिकारी श्री प्रेम भारद्वाज जी महामन्त्री, श्री स्वतन्त्र कुमार जी उप प्रधान श्री रणजीत आर्य जी सभा मन्त्री, श्री भारत भूषण मेनन।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, ठण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।